International Journal of Applied Research 2015; 1(12): 841-843

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(12): 841-843
www.allresearchjournal.com
Received: 15-09-2015
Accepted: 17-10-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र

राम की शक्ति पूजा का साहित्यिक महत्व

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य की अनेक रचनाएं विश्व साहित्य में प्रमुख स्थान रखतीं हैं। रामचरितमानस एवं सूरसागर तथा कामायनी जैसी रचनाएं हिन्दी साहित्य को गौरवान्वित किए हुए हैं। सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित राम की शक्ति पूजा अपना विशेष महत्व रखती है। ऐसी अद्भुत कविता हिन्दी साहित्य की धरोहर है। इस कविता के माध्यम से एक नया प्रयोग हिन्दी में हुआ है। निराला की यह सर्वश्रेष्ठ कविता, कविता तेा है ही साथ ही इसकी भाषा शैली भी अद्भुत है। प्राचीन गाथा परमपरा का विहगम अवलोकन करते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि गाथाओं में प्रायः लोकविश्वासों, अलौकिक तत्वों तथा अतिरंजन वर्णनों का समावेश होता है। राम की शक्ति पूजा में भी यह सब कुछ विद्यमान है। इस काव्य को कुछ विद्वानों ने महाकाव्य के रूप में इसे मण्डित करने का प्रयास किया है परन्तु सत्य यह है कि यह कविता महाकाव्य की योग्यता से परिपूर्ण नहीं है न ही निराला ने ऐसा इंगित किया हैं। यह ठीक है कि यह रचना असाधारण शैली और वीर भावना के कारण हिन्दी साहित्य में महत्व पूर्ण स्थान रखती है। अनेक विद्वानों ने इस कविता की भूरिभूरि प्रशंसा की है। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ राम विलास शर्मा के विचार अवलोकनीय हैं– राम की शक्ति पूजा जैसी नाटकीयता निराला की और किसी भी कविता में नहीं है। यहां उन्होंने अपने जीवन की अनुभूति, निराशा, पराजय, संघर्ष और विजय कामना को नाटकीय रूप दिया है।.....अन्तर्द्वन्द्व देखने, भावों और विचारों के संघर्ष को मूर्त रूप देने की कला का चरम विकास राम की शक्ति पूजा में है। [1]

कथावस्तु–योजना

राम की शक्ति पूजा यद्यपि एक छोटे से प्रसंग पर आधारित कविता है, परन्तु इसमें कवि ने असंख्य मौलिक उदभावनाओं से इसे अत्यन्त प्रभावशाली एवं गरिमामय बना दिया है। इस अद्भुत कविता में कुल 312 पंक्तियां हैं तथा इस कविता को पांच खण्डों में विभक्त किया जा सकता है।

1 राम–रावण के समर का गम्भीर वर्णन– इसमें युद्ध से लौटती निराश सेना शिविर में लौटती है तथा विकट स्थिति में सेनानायक श्रीराम के साथ सहयोगी गम्भीर मन्त्रणा करते दिखाए गए हैं तथा आगे की रणनीति पर प्रभु राम की आज्ञा की प्रतीक्षा करते दिखाए गए हैं।

आये सब शिविर, सानु पर पर्वत के, मन्थर
सुग्रीव विभीषण, जामवन्त आदिक बानर
सेनापति दल–विशेष के अंगद, हनुमान,
नल, नील, गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान।– राम की शक्ति पूजा

2 घनघोर प्रकृति का चित्रण–दूसरे खण्ड में अमावस्या की रात्री में घनघोर दृश्य का वर्णन किया गया है। आधुनिक नाटकों की भान्ति उसी समय राम के मन में जानकी की छवि बिजली के समान उभर आती है और उनकी आंखों से दो आंसू टपक पडते हैं।

3 क्रोधित हनुमान का आकाशमें विचरण–इस तीसरे खण्ड में रावण के अट्टहास का प्रत्युत्तर देने के लिए हनुमान क्षुब्ध होकर महानाश के लिए आकाश में पहुंच जाते हैं।इस दृश्य से भगवान शंकर भी भयभीत होकर शक्ति को सावधान करते हैं जो माता अंजना का रूप धारण करके हनुमान को सचेत करतीं हैं।

4 विभीषण द्वारा राम को शक्ति से अवगत कराना– विभीषण सीता को वापिस लाने के लिए रावण से बदला लेने की बात कहते हैं जामवन्त परामर्श देते हैं कि अगर रावण ने शक्ति की आराधना करके अपने को अजेय बनाया है तो राम को भी ऐसा ही करना चाहिए ताकि युद्ध में निश्चित जीत प्राप्त की जा सके।

ला द्वारा रचित राम की शक्ति पूजा अपना विशेष महत्व रखती है। ऐसी अद्‌भुत कविता हिन्दी साहित्य की धरोहर है। इस कविता के माध्यम से एक नया प्रयोग हिन्दी में हुआ है। निराला की यह सर्वश्रेष्ठ कविता तेा है ही साथही इसकी भाषा शैली अद्‌भुत है। प्राचीन गाथा परमपरा का विहगम अवलोकन करते ही यह स्पष्ट हो जाता है कि गाथाओं में प्रायः लोकविश्वासों,अलौकिक तत्वों तथा अतिरंजन वर्णनों का समावेश होता है। राम की शक्ति पूजा में भी यह सब कुछ विद्यमान है।इस काव्य को कुछ विद्वानों ने महाकाव्य के रूप में इसे मण्डित करने का प्रयास किया है परन्तु सत्य यह है कि यह कविता महाकाव्य की योग्यता से परिपूर्ण नहीं है न ही निराला ने ऐसा इंगित किया हैं। यह ठीक है कि यह रचना असाधारण शैली और वीर भावना के कारण हिन्दी साहित्य में महत्व पूर्ण स्थान रखती है। अनेक विद्वानों ने इस कविता की भूरिभूरि प्रशंसा की है। हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक डॉ राम विसलास शर्मा के विचार अवलोकनीय हैं– राम की शक्ति पूजा जैसी नाटकीयता निराला की और किसी भी कविता में नहीं है। यहां उन्होंने अपने जीवन की अनुभूति, निराशा, पराजय, संघर्ष और विजय कामना को नाटकीय रूप दिया है।.....अन्तर्द्वन्द्व देखने, भावों और विचारों के संघर्ष को मूर्त रूप देने की कला का चरम विकास राम की शक्ति पूजा में है।

कथावस्तु–योजना

राम की शक्ति पूजा यद्यपि एक छोटे से प्रसंग पर आधारित कविता है, परन्तु इसमें कवि ने असंक्ष्य मौलिक उदभावनाओं से इसे अत्यन्त प्रभावशाली एवं गरिमामय बना दिया है। इस अद्‌भुत कविता में कुल 312 पंक्तियां हैं तथा इस कविता को पांच खण्डों में विभक्त किया जा सकता है।

1 राम–रावण के समर का गम्भीर वर्णन– इसमें युद्ध से लौटती निराश सेना शिविर में लौटती है तथा विकट स्थिति मेंसेनानायक श्रीराम के साथ गम्भीर मन्त्रणा करते दिखाए गए हैं तथा आगे कीरणनीति पर प्रभु राम की आज्ञाकी प्रतीक्षा करते दिखाए गए हैं।

आये सब शिविर, सानु पर पर्वत के, मन्थर
सुग्रीव विभीषण, जामवन्त आदिक बानर
सेनापति दल–विशेष के अंगद, हनुमान,
नल, नील, गवाक्ष, प्रात के रण का समाधान।

2 घनघोर प्रकृति का चित्रण–दूसरे खण्ड में अमावस्या की रात्री में घनघोर दृश्य का वर्णन किया गया है। आधुनिक नाटकों की भान्ति उसी समय राम के मन में जानकी की छवि बिजली के समान उभर आती है और उनकी आंखों से दो आंसू टपक पडते हैं।

3 क्रोधित हनुमान का आकाशमें विचरण–इस तीसरे खण्ड में रावण के अट्टहास का प्रत्युत्तर देने के लिए हनुमान क्षुब्ध होकर महानाश के लिए आकाश में पहुंच जाते हैं।इस दृश्य से भगवान शंकर भी भयभीत होकर शक्ति को सावधान करते हैं जो माता अंजना का रूप धारण करके हनुमान को सचेत करतीं हैं।

4 विभीषण द्वारा राम को शक्ति से अवगत कराना– विभीषण सीता को वापिस लाने के लिए रावण से बदला लेने की बात कहते हैं जामवन्त परामर्श देते हैं कि अगर रावण ने शक्ति की आराधना करके अपने को अजेय बनाया है तो राम को भी ऐसा ही करना चाहिए ताकि युद्ध में निश्चित जीत प्राप्त की जा सके।

हे पुरुष–सिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ आराधन से दो उत्तर
तुम करो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर
रावण अशुद्ध होकर भी यदि कर सका त्रस्त
तो निश्चय तुम हो सिद्ध करोगे उसे ध्वस्त।

5 राम की शक्ति पूजा– इस अन्तिम खण्ड में राम शक्ति पूजा में ध्यानावस्थित दिखाए गए हैं। इसमें सुन्दर नाटकीयता भर कर कविता को प्रभाव शाली बनाया गया है। पूजा का अन्तिम दिन है तो दुर्गा अन्तिम कमल को चुरा लेतीं हैं। जैसे ही राम कमल चढाने के लिए हाथ आगे बढाते हैं कमल को न पाकर आराधनाटूटने के भय से राम निराश हो जाते हैं अचानक उनको याद आती है कि मॉ उन्हें बचपन में राजीवनयन पुकारती थीं अतः राम एकदम अपनी आंख को कमल के रूप में चढाने को उद्यत हो जाते हैं परन्तु इतने में दुर्गा प्रकट होकर राम का हाथ पकड लेतीं हैंतथा प्रसन्न होकर राम को विजयी होने का वरदान देतीं हैं इसी के साथ इस काव्य रचना का समापन होता हैं।

कथानक पर प्रभाव

राम की शक्ति पूजा का उत्स पौराणिक सन्दर्भों में देखा जा सकता है। देवी भागवत, शिवमहिम्नस्त्रोत, कृतिवास की रामायण से निराला की राम की शक्ति पूजा पूर्णतः प्रभावित है। शिवमहिम्नस्त्रोत में विष्णु द्वारा शिव की आराधना की जाती है।विष्णु एक हजार कमल पुष्पों से शिव की आराधना करना चाहते हैं लेकिन एक कमल कम रह जाता है। यह देखकर विष्णु पुण्डरीकाक्ष होने के कारण वे अपनी एक आंख भेंट करके इस तप को पूरा करने के लिए तत्पर हो जाते हैं यह देखकर भगवान शिव प्रसन्न हो जाते हैं। कृतिवास की रचना में भी रामरावण के अन्तिम निर्णायक युद्ध से पहले राम ने नारद के कहने पर नवरात्रि का व्रत किया और देवी की उपासना की।

राम की शक्ति पूजा में नारद का कार्य जामवन्त करते हैं। कृतिवास की बंगला रामायण का प्रभाव राम की शक्ति पूजा में स्पष्ट दिखाई देता है। केवल दो स्थानो पर कवि ने थोडा परिवर्तन किया है। शक्ति पूजा का परामर्श विभीषण की जगह जामवन्त देते हैं तथा कृतिवास में एक हजार कमलों का वर्णन है जबकि राम की शक्ति पूजा में 108 कमलों का उल्लेख है। अतः इसमे जरा भी अतिश्योक्ति नहीं कि कृतिवास की बंगला रामायण ने राम की शक्ति पूजा को सबसे अधिक प्रभावित किया।यह स्वाभाविक भी है क्योंकि बंगला में शक्ति पूजा का प्रचलन सर्वाधिक है तथा निराला का सम्बन्ध बंगाल से है, कवि होने के नाते परोक्ष रूप से यह उनकी श्रद्धांजली है।

काव्य का स्वरूप

राम की शक्ति पूजा के महाकाव्यत्व के विषय में भी विद्वानों में मतभेद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि राम की शक्ति पूजा में महाकाव्य जैसा प्रसिद्ध कथानक, महान चरित्र, और भव्य शैली है अतः इसे महाकाव्य की कोटि में रखा जाना चाहिए। दूसरी ओर अनेक विद्वान इस पक्ष में नहीं हैं उनका कहना है कि महाकाव्य का नायक उदात्त और उच्चकोटि का होना आवश्यक हैं परन्तु राम की शक्ति पूजा में जिस प्रकार के नायक को अभिव्यक्त किया गया है वह इस कोटि का नहीं है। प्रसिद्ध आलोचक नन्द दुलारे वाजपेयी ने इसे गाथा–काव्य की संज्ञा दी हैं। गाथा काव्य में लोकविश्वासों की प्रचुरता ,अतिरंजना का चमत्कार और अलौकिकता की अभिव्यंजना होती है। ये सभी योग्यताएं राम की शक्ति पूजा में हैं परन्तु इसे महाकाव्य की कोटि में नहीं रखा जा सकता।

एक और समूह इसे खण्ड काव्य मानता है। इसका कारण यह है कि यह लघु आकार की काव्य है। शास्त्रीय दृष्टि से इसे खण्ड काव्य ही कहा जा सकता हैं। उनका तर्क है कि राम की शक्ति पूजा का कथानक रामकाव्य के एक खण्ड से सम्बन्धित है,। इसके पिरीत कुछ विद्वानों का मत है कि यह कथानक खण्ड काव्य के भी अनुकूल नहीं है। कुछ विद्वान इसे लम्बी कविता मानते हैं।डॉ रमेश कुन्तल मेघ के अनुसार– कवि श्री निराला की राम की शक्ति पूजा एक ऐंसी रचना है जिसे आज की भाषा में संश्लिष्ट कविता कह सकते हैं। धनंजय वर्मा इसे महाकाव्यों की शैली पर लिखा गया एक नूतन प्रयोग मानते हैं।

रस योजना–राम की शक्ति पूजा मूलतः वीर रस से परिपूर्ण काव्य हैं। डॉ कृष्ण देव झारी के अनेसार– वीरता और ओज के बीच राम के स्मृति श्रृंगार का उदात्त चित्रण इस कविता का कोमल तम उदात्त अंश है।युद्ध विजय की चिन्ता में बैठे राम के हृदय में सीताजी का स्मरण विजय की द्विगुणित भावना भर देता है। श्रृंगार का ऐसा उदात्त चित्र काव्यों में विरला ही मिलता हें।

कवि ने इस कविता में रामरावण युद्ध के अतिरिक्त हनुमान के माध्यम से भी वीर रस को प्रस्तुत किया है। कवि ने वीर, रौद्र, और भयानक रसों के अतिरिक्त कुछ कोमल रसों की भी अवतारणा की है। यहां श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों पक्षेां को भी प्रस्तुत किया गया है। दो प्रसंगों में तो वात्सल्य रस भी देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त भक्ति भावना और आराधना के माध्यम से शान्त रस का परिपाक भी देखा जा सकता है–

मातः दश, भुजा विश्वज्योति, मैं हूं आश्रित,
हो बिद्ध शक्तिसे है खल महिषासुर मर्दित
जनरंजन चरण–कमल–तल, धन्य सिंह गर्जिता।

चरित्र–चित्रण

कवि ने मुख्यतः राम के चरित्र को उभारने का भरसक प्रयास किया है। वाल्मीकि एवं तुलसी ने तो राम के चरित्र को भव्यता प्रदान की ही है निराला ने उसे एक नया स्वरूप देकर नए ढंग से राम के चरित्र को उभारा हैं निराला ने राम को व्रहम का अवतार घोषित न करके एक अपूर्व मानव के रूप में व्याख्यायित किया हैं सीता के स्मरण आते ही मानव की तरह आंसू बहाते हैं। एक प्रख्यात योद्धा का रूप दर्शनीय है। राम के अतिरिक्त हनुमान, जामवन्त, विभीषण आदि के चरित्र भी सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किए गए हैं।

भाषाशैली

निराला ने इस कविता में प्रांजल खडी बोली का प्रयोग किया हैं। कुछ विद्वान इसे महाकाव्य की कोटि में रखने के पक्ष में हैं। इस कविता की शैली वर्णनात्मक है तथा नाटकीयता के समावेश से यह और भी सुन्दर लगती है। भाषा पर कवि का असाधारण अधिकार होने के कारण भाषा एवं शैली की दृष्टि से सर्वोत्तम कविता है। शब्द चयन अद्भुत है। रामरावण के युद्ध की भयंकरता कवि के शब्दों की टकराहट में भी दिखाई देती है–

राघव–लाघव–रावण–वारण–गत,युग्मप्रहद,
उद्धत–संकापतिमर्हित–कपि–दल–बल–विस्तर
अनिमेष–राम–विश्वजिछिव्य–शर–भंगभाव
विद्वांगःबुद्ध–कोपड–मुष्टि–खर–रुधिर–स्त्राव।

कुछ आलोचक उनकी भाषा को क्लिष्ट मानते हैं परन्तु निराला ने प्रसंग के अनुसार ही भाषा का प्रयोग किया है। कई स्थानों पर बिम्बात्मक एव ंचित्रात्मक भाषा का भी प्रयोग मिलता हैं

अलंकारप्रयोग–निराला ने अलंकारों का प्रयोग खुल कर किया है परन्तु यह प्रयोग समय और परिस्थिति के अनुकूल है। अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक आदि सभी प्रकार के प्रयोग इस कविता में मिल जाते हैं। निराला वैसे तो मुक्त छन्द के कवि हैं परन्तु इस कविता में छन्द के नए प्रयोग देख कर लगता है कि निराला नए छन्दों के भी प्रणेता थे। इस कविता में 24 मात्राओं के तुकान्त छन्द का प्रयोग किया है जो अद्भुत हैं।

इस तरह इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य के लिए यह कविता अमूल्य निधि है जिसमें हर तरह का नवीन प्रयोग मिलता है। दूसरी ओर परम्परागत रामकाव्य वर्णन में भी यह एक नया प्रयोग है जिससे आने वाली पीढी इसे आदर्श काव्य के रूप में स्वीकार करेगी।

सन्दर्भ सूचि

1. मनोज कुमार छायावादी सौंदर्य चेतना और निराला की काव्य दृष्टि पृ97
2. रामविलास शर्मा हिन्दी के छाया वादी कवि पृ 134
3. डॉ रामदरश राय आधुनिक हिन्दी कविता में पौराणिक सन्दर्भों की पुनर्रचना पृ89
4. राम विलास शर्मा निराला की साहित्य साधना पृ113
5. डॉ रामदरश राय छायावादी काव्य भाषा में अर्थतत्व पृ134
6. डॉ मोहन अवस्थी हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहास पृ 98